सुमित्रानंदन पंत

पर्वत प्रदेश में पावस

छायावाद के प्रमुख स्तंभ सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900में उत्तराखंड के कौसानीअल्मोड़ा में हुआ। 1915 में आपने साहित्य सृजन करना शुरू कर दिया। पंत जी की आरंभिक कविताओं में प्रकृति प्रेम और रहस्यवाद झलकता है। बाद मेंआपमार्क्स, गांधी जी व अरविंद के विचारों से प्रभावित हुए। इसके बाद की आपकीरचनाओं पर अरविंद दर्शन का प्रभाव नजर आता है। जीविका के क्षेत्र में पंत जी उदय शंकर संस्कृति केंद्र से जुड़े। आकाशवाणी के परामर्शदाता रहे। आपने लोकायतन सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की। 1961 में आप को पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। आपको हिंदी का पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 1960 में आप को साहित्य अकादमी तथा 1969 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। आप का निधन 1977 में हुआ।

<u>पाठपरिचय</u>

कविता में पर्वत प्रदेश की वर्षा ऋतु का वर्णन किया गया है। वर्षा के कारण पर्वत प्रदेश में प्रकृति अपना रूप प्रतिपल बदल रही है। विशाल पर्वत पर हजारों फूल खिले हैं तथा पर्वत की तली में दर्पण जैसे स्वच्छ निर्मल जल वाला तालाब है। पर्वत के झरने ध्वनि करते हुए बह रहे हैं। पर्वत पर लगे वृक्ष आकाश से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। एक ही पल में प्रकृति का रूप बदल जाता है। बादलों के कारण पर्वत दिखाई नहीं दे रहे। झरनों की केवल आवाज आ रही है।ऐसे लग रहा है जैसे वृक्ष पृथ्वी में धँस गए हैं तथावर्षा के देवता इंद्र कोई जादू कर रहे हैं।

1)

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्त्रदृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण- साफैला है विशाल!

<u>शब्दार्थ</u>:- पावसऋतु - वर्षा ऋतु, पल-पल- हर क्षण,मेखलाकार- करधनी के आकार की,अपार- विशाल, सहस्त्र-हजारों,दृग-सुमन- पुष्प रूपीआँखें, अवलोक- देख, निज- अपना,महाकार- विशाल आकार, ताल-तालाब,दर्पण- शीशा (आईना)

व्याख्या:-

वर्षा ऋतु थी तथा पर्वतीय क्षेत्र था।प्रकृति हर पल अपना रूप बदल रही थी। करधनी के आकार के विशाल पर्वत हैंतथा उस पर हजारों फूल खिले हैं। ऐसे लग रहा है जैसे पर्वत अपनी पुष्प रूपी आँखें फाड़कर पर्वत की तली में स्थित तालाब के जल में पड़रहे अपने प्रतिबिंब को देख रहा है। क्योंकि पर्वत की तली में विशाल तालाब है, जिसका जल आईने की तरह स्वच्छ निर्मल है।

भाषासौंदर्य:-

1) भाषा खड़ी बोली। संस्कृत के शब्दों का सुंदर प्रयोग- जैसे- पावस ऋतु,परिवर्तितमेखलाकार, अपार, दृग-सुमन,अवलोक, निज महाकार, दर्पण आदि।
2) चित्रात्मक शैली बिंबों का सुंदर प्रयोग।
3) छंद मुक्त रचना।
4) पर्वत प्रदेश, परिवर्तित प्रकृति अनुप्रास अलंकार।
5)दृग-सुमनरूपक अलंकार।
6) दर्पण-सा-विशाल उपमा अलंकार।
7) बार-बार पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
8) पर्वत का मानवीकरण किया गया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार।

2)

गिरिका गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों से-सुंदर
झड़ते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवरकेउरसे उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैंझाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

शब्दार्थ:- गिरि-पर्वत,गौरव-यश,मद- मस्ती,उत्तेजित-जोश से भरे हुए, निर्झर- झरने,उच्चाकांक्षा-ऊँची-ऊँची इच्छाएँ,तरुवर-वृक्ष, नीरव नभ-शांत आकाश,अनिमेष-एकटक देखना,चिंतापर-चिंता में मग्न।

व्याख्या:-

पर्वत पर बहने वाले झरने झर-झर की आवाज़ करके बह रहे हैं। ऐसे लग रहा है जैसे झरनेपर्वतों का यश गान कर रहे हैं। झरने की आवाज से नस-नस में उत्साह भर रहा है। झाग भरे झरने मोती की लड़ियों से सुंदर लग रहे हैं।

पर्वत के ऊपर वृक्ष लगे हैं। ऐसे लग रहा है जैसे किसी व्यक्ति के हृदय की ऊँची-ऊँची इच्छाएँहों। ऊँचेवृक्ष शांत आकाश को देख रहे हैं, ठीक वैसे ही ऊँची इच्छाएँरखने वाला व्यक्ति अपनी इच्छाओं को एकटक कुछ चिंतित से देख रहे है।

भाषासौंदर्य:-

1) भाषा खड़ी बोली। संस्कृत के शब्दों का सुंदर प्रयोग-जैसे-गिरि, गौरव, उत्तेजित, निर्झर, उच्चाकांक्षा,तरुवर, नीरव, अनिमेष, अटल, आदि।
2) चित्रात्मक शैली बिंबो का सुंदर प्रयोग।

3) मोती की लड़कियों से सुंदर,उच्चाकांक्षाओं से तरुवररूपक अलंकार।

4) झर-झर, उठ-उठपुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

5) गौरव गाकर, नीरव नभ,अनिमेषअटलअनुप्रास अलंकार

6)झरनोंववृक्षों का मानवीकरण किया गया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार।

3)

उड़ गया,अचानक लो,भूधर

फड़का अपार पारद के पर!

रव-शेषरह गए हैं निर्झर!

है टूट पड़ा भू पर अंबर!

धँसगए धरा में सभय शाल!

उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!

योंजलद-यान में विचर-विचर

था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

शब्दार्थ:- भूधर- पर्वत,पारद के पर-तारे के समान सफेद बादल,रव-शेष-केवल आवाज रहना, अंबर-आकाश, सभय-भय के साथ,शाल-शाल के वृक्ष,जलद-यान-बादल रूपी विमान,विचर-विचर-घूम रहे हैं,इंद्रजाल- जादू।

व्याख्या:-

अचानक पारे के समान सफेद बादल चारों ओर फैल जाते हैं। अब पर्वत दिखाई नहीं दे रहा। ऐसे लग रहा है जैसे वह अपने पारे के पर लगा कर उड़ गया है। बादल बहुत नीचे- नीचे हैं। ऐसे लग रहा है जैसे पृथ्वी पर आकाश टूट पड़ा हो। इस कारण झरने भी दिखाई नहीं दे रहे। केवल उसकी आवाज सुनाई दे रही है। बादल वृक्षों के चारों ओर भी हैं। ऐसे लग रहा है जैसे भय से

शाल के वृक्ष पृथ्वी में धँसगए हैं। बादल तालाब पर भी हैं और तालाब काजल दिखाई नहीं दे रहा। केवल उसपर बादल रूपी धुआं छाया है। ऐसे लग रहा है जैसे तालाब में आग लग गई हैतथाजैसे बादलों के विमान पर बैठकर वर्षा के देवता इंद्र कोई जादू कर रहे हैं।

भाषासौंदर्यः-

1) भाषा खड़ी बोली। संस्कृत के शब्दों का सुंदर प्रयोग-जैसेभूधर, अपार,पारद, अवशेष, अंबर, धरा,सभयजलद-यान, इंद्रजाल आदि।

2) चित्रात्मक शैली बिंबो का सुंदर प्रयोग।

3) पारद के पर रूपक अलंकार

4)विचर-विचरपुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

5) पर्वत व शाल के वृक्षों का मानवीकरण किया गया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न1)पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पावस ऋतु आने पर प्रकृति में अनेक परिवर्तन आते हैं। विशाल पर्वत, जो अभी तक दिखाई दे रहे थे, बादलों के कारण अब दिख नहीं रहे हैं। ऐसे लगता है जैसे वह पारे के पंख लगा कर उड़ गए हैं। अब पर्वतों के झरने नहीं दिखाई दे रहे, केवल उनकी आवाज सुनाई दे रही है। बादलों के कारण शाल के वृक्ष धरती में धँसेलग रहे हैं।

प्रश्न 2) मेखलाकारशब्द का अर्थ क्या है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहां क्यों किया है?

उत्तर-मेखलाया करधनी स्त्रियों का सबसे बड़े आकार का आभूषण है। पर्वत की विशालता और विस्तार को प्रकट करने के लिए कवि ने इस शब्द का प्रयोग किया है।

प्रश्न 3) सहस्त्र दृग सुमन से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

उत्तर- पर्वत पर हजारों फूल खिले हैं। कवि को वह हजारों फूल पर्वत की आँखें लग रही हैं, जिनसे विशाल पर्वत तालाब में पड़ने वाले अपने प्रतिबिंब को देख रहा है।

प्रश्न 4) कवि ने तालाब की समानता किस के साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर: कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है। जैसे स्वच्छ निर्मल दर्पण में प्रतिबिंब साफ दिखाई देता है, ठीक उसी प्रकार तालाब का जल स्वच्छ निर्मल है। उसमें पर्वत के विशाल आकार का प्रतिबिंब साफ दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 5) पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे- ऊंचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे हैं? वह किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

उत्तर: पर्वत पर आकाश को छूने वाले शाल के वृक्ष लगे हैं। ऐसे लग रहा है जैसे यह वृक्ष व्यक्ति की ऊँची आकांक्षाएं है और व्यक्ति रूपी वृक्ष चिंतित है कि यह आकांक्षाएँ पूर्ण होंगी या नहीं।

प्रश्न 6) शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?

उत्तर: बादल शाल के वृक्ष के आसपास भी हैं। आकाश दिखाई नहीं दे रहा है, इसलिए ऐसा लग रहा है जैसे शाल के वृक्ष पृथ्वी में धँसगए हैं।

प्रश्न 7) झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: पर्वत पर बहने वाले झरने ऐसे लग रहे हैं जैसे वह विशाल पर्वतों का यशगान कर रहे हों।झाग भरे झरने मोती की लड़ियों के समान सुंदर लग रहे हैं।

- **प्रश्न**8) इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।
- **उत्तर**:- कविता में अनेक स्थानों पर मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है जैसे:
- पर्वत अपनी सहस्त्रों फूल रूपी आँखें ओढ़कर तालाब में पड़ने वाले अपने प्रतिबिंब को देख रहा है।
- झर-झरकर बहने वाले झरने ऐसे लग रहे हैं जैसे वह पर्वतों का यश गान कर रहे हैं।
- शाल के वृक्ष एकटकअटल भाव से आकाश देख रहे हैं।
- वर्षा वह बादलों के कारण शाल के वृक्ष भय से पृथ्वी में धंस गए हैं।

प्रश्न 9) आपकी दृष्टि में इस कविता का सौंदर्य इन में से किस पर निर्भर करता है :

का) अनेक शब्दों की आवृत्ति पर

ख)शब्दों की चित्रमयी भाषा पर

ग) कविता की संगीतात्मकता पर

उत्तर:- कविता का सौंदर्यकिसी एक कारण पर निर्भर नहीं करता, अपितु कई तत्व कविता के सौंदर्य को बढ़ाते हैं:-

- अनेक शब्दों की आवृत्ति से कविता में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का सौंदर्य उत्पन्न हुआ है तथा कविता में गति व उमंग भी आ गई है जैसे:

-गिरि का गौरव गाकर झर-झर।

- गिरिवरके उरसे उठ-उठ कर।

- शब्दों की चित्रमयीभाषा से कविता में दृश्य वश्रव्य बिंबउत्पन्न हुए हैं:
  - मेखलाकारपर्वत अपार

-अपने सहस्त्र दृग सुमन फाड़आदि।

- संगीतात्मकता के गुण के कारण कविता में सुर ताल वलय उत्पन्न हुआ है।

प्रश्न 10) पावस ऋतु किसे कहते हैं? प्रस्तुत कविता में किस पावस ऋतु का वर्णन किया गया है?

उत्तर: वर्षा ऋतु को पावस ऋतु कहा जाता है। प्रस्तुत कविता में पर्वतीय क्षेत्र की वर्षा का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 11) पावस के दृश्य को कवि इंद्रजाल क्यों मानता है?

उत्तर: इंद्रजाल का अर्थ है जादू। पावस ऋतु में पर्वत प्रदेश में प्रति पल प्रकृति अपना रूप बदल रही है। कवि को लगता है जैसे वर्षा ऋतु के देवता इंद्र कोई इंद्रजाल कर रहे हैं।

प्रश्न 12) बादलों से पर्वत के छुप जाने पर कवि ने क्या कल्पना की है?

उत्तर: बादलों से जब पर्वत छुप जाते हैं, तब कवि को लगता है जैसे पर्वत बादल रूपीपारे के पंख लगा कर उड़ गए हैं, क्योंकि अब वह दिखाई नहीं दे रहे हैं।